भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 **अप्रैल** 2005 **अंक** 4

तरक्की चाहिए तो पढ़ो किताब

मैक्सिको की राजधानी मैक्सिको सिटी के पुलिसकर्मी अब पिस्तौल और हथकड़ियों के अलावा मशहूर लेखकों की किताबों के साथ गश्त करते दिखेंगे। पुलिस अधिकारियों से कहा गया है कि वे पदोन्नति चाहते हैं तो उन्हें हर महीने एक किताब पढ़नी होगी। ऐसा नहीं करने वाले पुलिसकर्मियों को तरक्की नहीं दी जाएगी। मेयर का कहना है कि इस योजना के लागू होने से पुलिस अधिकारियों के कामकाज में सुधार होगा। मैक्सिको सिटी में अपराध की दर बहुत ज्यादा है और इसी वजह से यह शहर दुनिया की अपराध राजधानी के रूप में मशहूर है। देश में पुलिस की छवि बेहद खराब है। उन्हें आलसी, भ्रष्ट और अक्षम माना जाता है। सांचेज का कहना है कि पुलिसकर्मियों को सुधारने के लिए सख्ती जरूरी है। उन्होंने कहा कि अधिकारियों के ज्ञान का स्तर बढ़ाया जाए तो नि:संदेह ही उनकी सोच बदलेगी और उनके काम का स्तर ऊपर उठेगा। सांचेज ने कहा, योजना के लागू होते ही एक हजार से ज्यादा पुलिस अधिकारी बेहतर इन्सान और सक्षम अधिकारी बन सकेंगे। पुलिस अधिकारी उनकी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते। अधिकारियों ने किताबें पढ़ी या नहीं इसकी जानकारी के लिए समय-समय पर उनकी परीक्षा ली जाएगी।

मगर कवि

आजकल किताबें पढ़ने का चलन नहीं है
हज़ारों-हज़ार शब्द क़तारों में सजे इन्तज़ार करते हैं
ललक-भरी आँखों का
आजकल फ़िल्में देखने
या उससे भी ज़्यादा
टेलीविज़न देखने की चाह है लोगों में
बहुत हुआ तो एकाध रंगीन चिकनी पत्रिका पलट ली
अभागा कहा जायेगा वह अख़बार
जो साल में दो-चार घोटालों
या रसीले काण्डों के चटपटे विवरण न जुटा पाये
मगर कवि
जन्म देते हैं शब्दों को लगातार
सींचते हैं उन्हें अनवरत अपने ख़ून से
तैयार करते हैं उन्हें
अपना सन्देश ले जाने के लिए
जैसे पत्तों को तैयार करते हैं पेड़
जैसे बीजों को तैयार करते हैं पेड़
जैसे समुद्र तैयार करते हैं बादलों को
जेठ की घाम सहते हुए भी।

—नीलाभ

बौद्धिक धरोहर की सुरक्षा और सर्वसुलभता

मनुष्य के सभ्यता की कहानी कहती हैं पुस्तकें, पुस्तकें बताती हैं मनुष्य के संघर्ष की गाथा, राष्ट्रों के उत्थान-पतन का इतिहास और सांस्कृतिक विकास के चित्र प्रस्तुत करती हैं पुस्तकें।

पुस्तकें हमारी निधि हैं, हमारी पहचान हैं। हम भूल गये नालन्दा को, उस विश्वविद्यालय को, जिसने विश्व में बौद्ध संस्कृति का प्रसार किया। भारतवर्ष ने एशिया महाद्वीप को एक सूत्र से जोड़ा।

नालन्दा विश्वविद्यालय ने ग्रन्थालय संस्कृति को जन्म दिया। उस समय के पुस्तकालय जब आज की तरह पुस्तकों के मुद्रण की व्यवस्था नहीं थी, हस्तलेख भी तैयार करते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय ग्रन्थालय के तीन प्रमुख भवन थे—रत्न सागर, रत्नोदधि और रत्न भवन। रत्नोदधि ग्रन्थालय के विशाल भवन नौ खण्डों में विभक्त था, इनमें लगभग 300 कमरे थे। प्रतिलिपिकारों का एक विभाग था। चीनी यात्री फाह्यान यहाँ से 520 ग्रन्थ चीन ले गया। ह्वेनसांग भी चीन से भारत आया, तीन वर्ष भारत में रहा। यह 657 ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ चीन ले गया। इत्सिंग तीसरा चीनी यात्री था जो दस वर्ष तक भारत में रहा। उसका उद्देश्य भारतीय ग्रन्थों की प्रतिलिपि तैयार कराना था। उसने 500 बौद्ध ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ चीन भेजीं। कहते हैं विक्रमशिला विश्वविद्यालय का ग्रन्थालय नालन्दा के रत्नोदधि से भी बड़ा था।

ये ग्रन्थालय थे जहाँ ग्रन्थ गूँथे जाते थे। हस्तलेख तैयार कर उन्हें वेष्टन में बाँधे जाते थे। मुद्रण के बाद ग्रन्थ का स्वरूप पुस्तक हो गया और पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय। उस समय ग्रन्थालय थे, पुस्तकालय नहीं, क्योंकि वहाँ ग्रन्थ रचे जाते थे, उनकी प्रतिलिपि तैयार करने में कितने लोग निष्ठापूर्वक लगे होते थे। राजा भोज ने संस्कृत ग्रन्थों का विशाल भण्डार तैयार करवाया था। गुजरात में जैन ग्रन्थों के भण्डार हैं। मुस्लिम काल में भी हस्तलिखित ग्रन्थ तैयार कराये गये।

ब्रिटिश शासनकाल में ऐसे अनेक दुर्लभ ग्रन्थ (हस्तलेख) ब्रिटेन गये जो इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी की निधि है। पूना का भाण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट अत्यन्त समृद्ध है, इसमें लगभग 23,000 ग्रन्थ हैं। पटना के खुदाबख्श ग्रन्थालय में अरबी-फारसी और उर्दू के अनेक दुर्लभ ग्रन्थ तथा चित्र हैं। ऐसे अनेक ग्रन्थालय इस देश में हैं, वे हमारी निधि हैं। इनकी सुरक्षा के साथ अध्येताओं के लिए सर्वसुलभता की अपेक्षा है।

आज एलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से ऐसे सभी ग्रन्थों की सीडी तैयार कर वेबसाइट और इण्टरनेट के माध्यम से शोधकर्ताओं तथा अध्येताओं को सुलभ कराये जा सकते हैं। आज भी कितनी पाण्डुलिपियाँ, पुरानी पुस्तकें जो अनुपलब्ध हैं, हमारी बौद्धिक निधि हैं। उन सबकी सीडी तैयार कराकर पुस्तकालयों को सुलभ करानी चाहिए। आर्केलॉजिकल सर्वे की तर्ज पर सभी प्रदेशों, उनके प्रमुख नगरों में ऐसे केन्द्र स्थापित किये जायँ जहाँ बौद्धिक निधियों की खोज, उनकी सुरक्षा और उनकी सुलभता निश्चित होती रहे।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्मान-पुरस्कार

सुनील गंगोपाध्याय को सरस्वती सम्मान

के०के० बिरला फाउण्डेशन, दिल्ली द्वारा वर्ष 2004 के 'सरस्वती सम्मान' के लिए बँगला के प्रतिष्ठित साहित्यकार **सुनील गंगोपाध्याय** का चयन किया गया है। श्री गंगोपाध्याय को यह सम्मान उनके बँगला उपन्याय *प्रथम आलो* के लिए दिया जायगा। सम्मानस्वरूप प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा पाँच लाख रुपये दिये जाँयगे।

डी० जयकांतन को ज्ञानपीठ पुरस्कार

तमिल के शीर्षस्थ कथाकार, निबन्धकार और फिल्मकार **डी० जयकांतन** को 2002 के लिए साहित्य जगत का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया जायगा। पुरस्कार के अन्तर्गत प्रशस्ति-पत्र, वाग्देवी की प्रतिमा और पाँच लाख रुपये की सम्मान राशि भेंट की जायगी। जयकांतन का साहित्य जटिल मानवीय चरित्र की गहरी समझ का प्रतिबिम्बन करता है, जो भारतीय यथार्थ का प्रामाणिक एवं सार्थक मानक है। डी० जयकान्तन के चालीस उपन्यास लगभग दो सौ कहानियाँ और पन्द्रह निबन्ध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ अनुवाद भी किये हैं। रोमां रोलां कृत महात्मा गाँधी की जीवनी का उन्होंने तमिल में अनुवाद किया है। दो आत्मकथात्मक कृतियों में उन्होंने राजनीति और कला क्षेत्र से सम्बन्धित अपने अनुभवों का वर्णन किया है। अपनी गैर पारम्परिक कहानियों और उपन्यासिकाओं से लोकप्रिय पत्रिकाओं में डी० जयकांतन ने तूफान खड़ा कर दिया था। अपनी अनेक कृतियों में उन्होंने महिलाओं की समस्याओं को साहसपूर्वक उठाया है। उन्होंने 1964 में फिल्म क्षेत्र में भी कदम रखा था। अब तक उनकी लगभग 10 कृतियों पर फिल्में बन चुकी हैं। उनकी तीन कृतियाँ छोटे परदे पर भी आ चुकी हैं।

प्रबोध साहित्य सम्मान

मैथिली भाषा और साहित्य की समृद्धि में योगदान स्वरूप **महेन्द्र मलंगिया** को वर्ष 2005 का प्रबोध साहित्य सम्मान प्रदान किया जायगा। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति-पत्र तथा एक लाख रुपये दिये जायँगे। श्री मलंगिया मैथिली ड्रामा आन्दोलन के प्रमुख हैं। मैथिली समाज के अनजाने वर्गों को अपनी कृतियों द्वारा सामने लाने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

श्यामपलट पाण्डेय को 'सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कार'

श्यामपलट पाण्डेय को उनके तीसरे काव्य-संग्रह '*अपना वजूद*' के लिए 'घनश्यामदास सराफ साहित्य पुरस्कार' योजना के अन्तर्गत हिन्दी भाषा के प्रतिष्ठित सम्मान 'सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कार-2003' से सम्मानित किया गया। प्रतिवर्ष की तरह इस साल भी

हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, राजस्थानी और गुजराती भाषा के रचनकारों को पुरस्कृत किया गया। सर्वोत्तम पुरस्कार पाने वाले प्रत्येक रचनाकार को 11,000 रुपये सम्मान राशि, प्रशस्ति-पत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया गया।

विशेष बात यह है कि 'सुनामी पीड़ितों' के दु:ख-दर्द से द्रवित श्री पाण्डेय ने 11,000 रुपये की सम्मान राशि सुनामी पीड़ितों के लिए वहीं मंच पर ही दान कर दी।

पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत करने हेतु एक विशेष समारोह 9 मार्च, 2005 को, बालचंद हीराचंद समागृह, चर्चगेट, मुम्बई-400 020 में आयोजित किया गया, जिसमें शहर के प्रबुद्ध रचनाकारों एवं साहित्यानुरागियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

हिन्दी अकादमी का साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने अपने कार्यक्रमों की श्रृंखला में 6 मार्च, 2005 को फिक्की सभागार, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली में साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह आयोजित किया। इस सम्मान समारोह में लेखकों एवं साहित्यकारों को वरिष्ठ कथाकार राजेन्द्र यादव ने सम्मानित किया। समारोह में दिल्ली की मुख्यमंत्री एवं अध्यक्ष हिन्दी अकादमी श्रीमती शीला दीक्षित मुख्य अतिथि थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ० मुकुंद द्विवेदी ने की।

इस सम्मान समारोह में **श्री नेमिचन्द्र जैन** को हिन्दी भाषा और साहित्य के उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2004-05 के हिन्दी अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये का चेक, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गये।

वर्ष 2004-05 को **साहित्यकार सम्मान** से सम्मानित किये गये साहित्यकारों में प्रो० मुज़ीब रिज़वी, डॉ० मस्तराम कपूर, प्रो० सूरजभान सिंह, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, श्रीमती कुसुम अंसल, श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी', श्री अमरनाथ 'अमर' (पत्रकारिता), डॉ० सत्यमित्र दुबे, आचार्य गुरुप्रसाद, श्री मनोज मिश्र (पत्रकारिता) तथा श्री बल्लभ डोभाल शामिल हैं। प्रत्येक साहित्यकार को इक्कीस हजार रुपये का चेक, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये। इसके अलावा वर्ष 2004-05 के **काका हाथरसी सम्मान** से हास्य-व्यंग्य कवि श्री अरुण जैमिनी को विभूषित किया गया। सम्मान स्वरूप इक्कीस हजार रुपये का चेक, शाल, प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

वर्ष 2003-04 का **विशिष्ट कृति सम्मान** डॉ० जगदीश चन्द्रिकेश की कृति 'वैदिककालीन रूपंकर कलाएँ' (कला-समीक्षा) के लिए प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें इक्कीस हजार रुपये का चेक, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र किया गया।

वर्ष 2003-04 के **साहित्यिक कृति सम्मान** से सम्मानित किये गये साहित्यकारों में श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव की 'अनभै कथा' (कविता संग्रह), श्री मनोज मेहता की 'सुलगा हुआ राग' (कविता संग्रह), श्री मोहनदास नैमिशराय की 'वीरांगना झलकारी बाई' (उपन्यास), श्री क्षितिज शर्मा की 'पगडंडियाँ' (उपन्यास), श्री लीलाधर मंडलोई की 'दिल का किस्सा' (लेख संग्रह), श्री ज्योतिष जोशी की 'संस्कृति विचार' (सांस्कृतिक अनुशीलन), डॉ० एम०डी० थॉमस की 'कबीर और ईसाई चिंतन', डॉ० देशबन्धु राजेश तिवारी की 'कामकाजी हिन्दी भूमण्डलीकरण के दौर में' (भाषा-विमर्श), श्री उर्मिलेश की 'झेलम किनारे दहकते चिनार' (यात्रा-वृत्तांत), श्री सुधीरचन्द्र की 'हिन्दू, हिन्दुत्व हिन्दुस्तान' (आलेख संग्रह), तथा लोकायन द्वारा सम्पन्न कराये गये शोध कार्य पर आधारित श्री राजेश कवि को 'रिक्शा एक महागाथा : पहचान, संघर्ष और दावेदारी' (विवेचनात्मक आलेख संग्रह) शामिल हैं। साहित्यिक कृति सम्मान से सम्मानित किये गये साहित्यकारों ग्यारह हजार रुपये का चेक, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गए।

साथ ही वर्ष 2003-04 के **बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान** योजना के अन्तर्गत श्री देवेन्द्र कुमार की कृति 'एक छोटी बाँसुरी' (बाल उपन्यास), श्री प्रेमाचार्य शास्त्री की 'वेदों की श्रेष्ठ कहानियाँ' (कहानी संग्रह), श्री हरिपाल त्यागी की 'ननकू का पाजामा' (बाल कहानी संग्रह), डॉ० प्रदीपकुमार मुखर्जी की 'बाल विज्ञान कथा कोश' (बाल विज्ञान कथाएँ), श्रीमती हेम भटनागर की 'संवादी स्वर' (निबन्ध संग्रह), श्री सुदर्शनकुमार भाटिया की 'भूकम्प के झटके' (आलेख संग्रह-तकनीकी), श्री अमर गोस्वामी की 'शाबास, मुन्नू!' (बाल कहानी संग्रह) और श्री जयप्रकाश भारती की 'दीप जले : शंख बजे' (बाल कहानी संग्रह) को सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप साहित्यकारों को पाँच हजार एक सौ रुपये का चेक, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गये।

बाल साहित्य के लिए सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे को भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् द्वारा बच्चों में लोकप्रियकरण के लिए, वर्ष 2004 का राष्ट्रीय पुरस्कार, 27 फरवरी 2005 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर टेक्नोलॉजी भवन के रमन सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। पुरस्कार में डॉ० देवसरे को एक लाख रुपये की राशि, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। यह पुरस्कार केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री कपिल सिब्बल ने प्रदान किया। डॉ० हरिकृष्ण देवसरे

सुविख्यात बाल साहित्यकार हैं। यह राष्ट्रीय पुरस्कार उन्हें बाल साहित्य में उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण, बच्चों

चित्र में : (दाएँ से बाएँ) श्री कपिल सिब्बल, केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति-पत्र एवं एक लाख रुपये का चेक प्रदान करते हुए।

में वैज्ञानिक रुचि जागृत करने और उन्हें नयी दृष्टि देने के लिए उनके जीवनपर्यन्त योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को पूश्किन सम्मान

मास्को स्थित 'भारत-मित्र' समाज ने हिन्दी के चर्चित गीतकार और कवि **डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र** को पूश्किन सम्मान से सम्मानित करने का निर्णय किया है। यह सम्मान प्रतिवर्ष हिन्दी के किसी साहित्यकार को दिया जाता है।

इस सम्मान के अन्तर्गत डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को दस दिन की यात्रा पर रूस बुलाया जाएगा तथा उन्हें मास्को व पीतेरबुर्ग नगरों की यात्रा कराई जाएगी। यात्रा के दौरान रूस के लेखकों, कवियों व बुद्धिजीवियों के साथ उनकी मुलाकातें कराई जाएँगी।

डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र आजकल ओ०एन०जी०सी० देहरादून में मुख्य प्रबन्धक राजभाषा के पद पर कार्यरत हैं।

मालवगढ़ की मालविका

संतोष श्रीवास्तव को उनके उपन्यास 'मालवगढ़ की मालविका' के लिए 11 मार्च 2005 को प्रियदर्शिनी अकादमी, मुम्बई ने राज्य के वित्तमंत्री जयंतराव पाटिल की अध्यक्षता में 25000 रुपये का हिन्दी साहित्यकार पुरस्कार प्रदान किया।

सम्पादक-शिरोमणि

साहित्य मण्डल, श्री नाथ द्वारा ने विगत 3-4 मार्च 2005 को ब्रजभाषा पाटोत्सव समारोह के अवसर पर सुप्रसिद्ध रामकथा मर्मज्ञ, बाल साहित्य सेवी एवं 'जयतु हिन्दू विश्व' मासिक के प्रधान सम्पादक **श्री विजयप्रकाश त्रिपाठी** को नाथ द्वारा मन्दिर के प्रधान मुखिया श्री नरहरि ठक्कर ने 'सम्पादक-शिरोमणि की मानद उपाधि से समलंकृत किया। श्री त्रिपाठी को संस्था अध्यक्ष मनोहर कोठारी ने शाल, उत्तरीय, पुष्पहार, साहित्य व मन्दिर प्रसाद प्रदान किया।

डॉ० केवलकृष्ण पाठक सम्मानित

रविन्द्र ज्योति पत्रिका, जीन्द हरियाणा के सम्पादक **डॉ० केवलकृष्ण पाठक** को अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उज्जैन ने 20 फरवरी को डॉ० अम्बेडकर सम्पादक रत्न सम्मान प्रदान किया।

कोलकाता में डॉ० केवलकृष्ण पाठक को श्रीफल प्रदान करते हुए प्रोफेसर श्री अनिलकुमार राय

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था कोलकाता ने 27 फरवरी 2005 को राजश्री सम्मान से अलंकृत किया।

डॉ० श्याम सखा 'श्याम' को पाण्डुलिपि पुरस्कार

हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ ने रोहतक के वरिष्ठ चिकित्सक **डॉ० श्याम सखा 'श्याम'** को उनके पंजाबी कथा संग्रह 'इकसी बेला' को 'पाण्डुलिपि पुरस्कार' के लिए चयन किया गया। पुस्तक प्रकाशित होने पर 7500 रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये जायेंगे।

श्रीलाल शुक्ल व कैफ सहित छह को 'यश भारती'

इस वर्ष का 'यश भारती' सम्मान प्रख्यात साहित्यकार **श्रीलाल शुक्ल, गोपालप्रसाद व्यास** तथा क्रिकेट खिलाड़ी **मो० कैफ**, हॉकी खिलाड़ी **देवेश चौहान**, तैराक **काव्या गुप्ता** और बागपत के **सुभाष पहलवान** को दिए जाने की सम्भावना है। ज्ञात हुआ है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह ने इन नामों पर अपनी सहमति दे दी है। यह सम्मान 16 अप्रैल को गन्ना संस्थान सभागार में आयोजित समारोह में दिए जाएँगे। पुरस्कार स्वरूप 5 लाख रुपये की राशि और प्रशस्ति-पत्र दिया जायगा।

भारतीय व पाक लेखक को किरियामा पुरस्कार

साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारतीय व पाकिस्तानी लेखकों को संयुक्त रूप से इस वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय किरियामा पुरस्कार की घोषणा की गई है।

सुकेतु मेहता और पाकिस्तानी साहित्यकार **नदीम असलम** को 30,000 डॉलर का यह पुरस्कार दिया जाएगा। यह पुरस्कार पैसिफिक रिम वॉयसेस की ओर से दिया जाता है। सुकेतु मेहता को उनके उपन्यास 'मैक्सिमम सिटी : बॉम्बे लॉस्ट ऐंड फाउंड' और नदीम असलम के 'मैप्स फॉर लॉस्ट लवर्स' के लिए इस पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा है।

उल्लेखनीय है कि मेहता ने बॉलीवुड की फिल्म मिशन कश्मीर की कहानी भी लिखी है। मैक्सिमम सिटी : बॉम्बे लॉस्ट ऐंड फाउंड में उन्होंने पुरानी और नई मुम्बई के अंतर को दर्शाने की कोशिश की है। वहीं, असलम का उपन्यास इंग्लैण्ड में रहने वाले एक पाकिस्तानी समुदाय की कहानी है। इसके शुरुआत में ही उपन्यास के मुख्य पात्र दो प्रेमी, चंदा व जुगनू लापता हो जाते हैं।

लोकार्पण

रामनाथ गोयनका की जीवनी का लोकार्पण

भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत ने 16 मार्च, 2005 को श्रीमती अनन्य गोयनका लिखित इण्डियन एक्सप्रेस ग्रुप के संस्थापक रामनाथ गोयनका की जीवनी 'रामनाथ गोयनका : ए लाइफ इन ब्लैक एण्ड व्हाइट' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर शेखावतजी ने कहा—गोयनकाजी भारतीय पत्रकारिता जगत के निर्भीक एवं साहसी व्यक्ति थे। उनमें जबरदस्त संकल्प शक्ति थी। अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भी वे उद्विग्न नहीं होते थे, शान्त रहते थे। पत्रकारिता को उन्होंने सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की।

स्व० रामनाथ गोयनका की पुत्रवधू श्रीमती अनन्य गोयनका ने यह पुस्तक लिखने का प्रयोजन बताते हुए कहा कि उनके पुत्र ने अपने दादा के विषय में जिज्ञासा व्यक्त की, वह अधिक से अधिक जानना चाहता था। एक ओर उनका जीवन अत्यन्त सरल था, दूसरी ओर उन्होंने प्रेस की आज़ादी की रक्षा के लिए बहुत खतरे उठाये।

हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास

साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन के सभागार में 24 फरवरी 2005 को हिन्दी बुक सेन्टर, आसफ अली रोड, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित डॉ० इन्दुप्रकाश पाण्डेय की महिला लेखिकाओं के 23 उपन्यासों की समीक्षाओं पर आधारित पुस्तक 'हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास' का लोकार्पण एवं साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो० इन्द्रनाथ चौधरी ने की। विशिष्ट अतिथि का पद श्री कन्हैयालाल नन्दन ने ग्रहण किया। इस अवसर पर विशिष्ट संवादी के रूप में मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, गीतांजलिश्री व चन्द्रकान्ता, जिनके उपन्यासों की समीक्षा इस पुस्तक में की गई उपस्थित थीं। इन्दुप्रकाश पाण्डेय ने बताया कि पुस्तक में उन्होंने 19 लेखिकाओं की समीक्षा लिखी, उसे सम्बन्धित लेखिका के पास भेजा, ताकि उनकी प्रतिक्रियाओं के आलोक में पुस्तक को बेहतर बना सकें। किन्तु सबने उत्तर नहीं दिया। इस पर चन्द्रकान्ता ने कहा—लेखक और समीक्षा के बीच मैं नहीं आना चाहती। कार्यक्रम का संचालन श्री दिनेश मिश्र द्वारा किया गया।

लोकार्पण समारोह

प्रगतिशील लेखक संघ, गाजीपुर के तत्वावधान में आयोजित समारोह में डॉ० गजाधर शर्मा 'गंगेश' की दो नाट्य कृतियों 'यह हुई न बात' और 'एक अनार सौ

बीमार' का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार डॉ० विवेकी राय ने किया।

डॉ० राय ने दोनों कृतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ० गंगेश की दोनों कृतियाँ नाट्य विधा की कसौटी पर पूरी तरह खरी उतरी हैं। इन्होंने नाजुक तथा संवेदनशील विषयवस्तु को जिस तरह सन्तुलित ढंग से पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है वह प्रशंसनीय है। आम साहित्यकार ऐसे विषयों पर लेखनी चलाने का साहस नहीं जुटा पाते। साहित्यकारों से ऐसे ही साहसिक कदम की समाज अपेक्षा करता है। उन्होंने कहा कि उद्वेलन और मंथन के भीतर से जो समाधान निकला है वह इतनी छोटी नाट्य कृति के भीतर समाहित करके अभिव्यक्ति प्रदान करना एक कुशल रचनाकार होने का बोध कराता है। ये कृतियाँ अभिनय और पठन दोनों दृष्टि से सर्वथा उपयुक्त है। डॉ० गंगेश को किसी के प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। इनकी नाट्य कृतियों की प्रस्तुति को हजारों लोगों ने सराहकर जो प्रमाण दिया है वह अपने आप में एक बड़ा प्रमाण है।

डॉ० विवेकी राय डॉ० गजाधर शर्मा की नाट्य कृतियों का लोकार्पण करते हुए

डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल ने कहा कि नाटक में अर्थ और क्रिया दोनों का होना नितान्त आवश्यकत है। डॉ० गंगेश की कृतियों में ये दोनों तत्त्व विद्यमान हैं। इसीलिए दोनों कृतियाँ लोक ग्राह्य और मंचन की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। यदि यह कहा जाय कि गंगेश ने लोकऋण चुकाने का सफल प्रयास किया है तो अत्युक्ति नहीं होगी। इनकी कृतियों में समासिक संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए देश और समाज के मूल तत्त्वों को बनाये रखने की चिन्ता स्पष्टदिखायी देती है।

'वर्तमान साहित्य' के रांगेय राघव विशेषांक का लोकार्पण

अलीगढ़ से प्रकाशित 'वर्तमान साहित्य' के रांगेय राघव विशेषांक का लोकार्पण करते हुए सुप्रसिद्ध कथाकार असगर वजाहत ने कहा—इस विशेषांक के बहाने रांगेय राघव के युग के बुनियादी सवालों पर लौटने का अवसर है। सम्पादक कुँवरपाल सिंह के अनुसार रांगेय राघव देश के अति साधारण जन के प्रतिनिधि लेखक हैं। लोकार्पण समारोह में भरतपुर में अशोक सक्सेना, प्रो० शैलेश जैदी, नमिता सिंह तथा अन्य साहित्यकारों ने रांगेय राघव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की। रांगेय राघव के निकट सहयोगी डॉ० कुन्दनलाल उप्रेती ने अपने संस्मरण सुनाते हुए उनका प्रिय शेर सुनाया—

''कहो तूफां से कि लंगर उठाये,
मैं उसकी जिद देखना चाहता हूँ!''

धूप की चिरैया का लोकार्पण

प्रेम शान्ति साहित्य संस्कृति संस्थान एवं दी बुक मार्क के संयुक्त तत्वावधान में सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं सुश्री मंजु गुप्ता कृत कविता-संग्रह 'धूप की चिरैया' पुस्तक का 5 मार्च 2005 को लोकार्पण सुप्रसिद्ध कवयित्री सुश्री इन्दु जैन द्वारा सम्पन्न हुआ। डॉ० बलदेव वंशी, सुश्री संतोष गोयल, डॉ० शेरजंग गर्ग, डॉ० महीप सिंह और डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना ने 'धूप की चिरैया' की कविताओं पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। डॉ० बलदेव वंशी का कहना था—'धूप की चिरैया' अपनी भाव-भंगिमा, अर्थ व्यंजना और प्रकृति लोक की मासूमियत के साथ ही साथ अक्षय ऊर्जा से सम्बद्धता के कारण सभ्यता के उजलेपन और संस्कृति के संस्कारी पक्षों (पंखों) से धरती आकाश को उड़ती है।

स्मृति शेष

शलाका पुरुष नेमिचन्द्र जैन नहीं रहे

'तार सप्तक' के यशस्वी कवि, प्रख्यात नाट्य समीक्षक, आलोचक और रंगकर्मी **नेमिचन्द्र जैन** का गुरुवार, 24 मार्च 2005 को उनके निवास पर निधन हो गया। 18 दिन पूर्व 6 मार्च 2005 को हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह आयोजित किया था। इस सम्मान समारोह में जैनजी को हिन्दी भाषा और साहित्य के उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2004-05 के हिन्दी अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया गया था।

16 अगस्त 1919 को आगरा में जन्मे जैनजी पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। श्री जैन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और संगीत नाटक अकादमी से 1950 के दशक में जुड़े थे। वह एनएसडी के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए थे। वह राजधानी से प्रकाशित 'द स्टेटस मैन' के वर्षों तक नाट्य समीक्षक भी थे। अज्ञेय ने जब प्रथम 'तार सप्तक' का सम्पादन किया था वे उन सात कवियों में शामिल थे जिन्होंने हिन्दी नयी कविता को दिशा दी।

श्री जैन ने आजादी के बाद हिन्दी में नाट्य समीक्षा को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। वह 1965 से हिन्दी रंगमंच की चर्चित पत्रिका 'नटरंग' निकाल रहे थे। बाद में उन्होंने नटरंग प्रतिष्ठान की भी स्थापना की जो रंगकर्म के अध्ययन शोध और सन्दर्भ ग्रन्थों का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। श्री जैन इप्टा आन्दोलन से भी जुड़े थे।

उन्हें संस्कृति विभाग की मानद फैलोशिप भी मिली थी। थियेटर की दुनिया में उनके योगदान को देखते हुए 1999-2000 में संगीत नाटक अकादमी ने भी उन्हें सम्मानित किया था। साहित्य कला परिषद ने भी उन्हें सम्मानित किया था। 'रंग दर्शन', 'रंग परम्परा', 'दृश्य अदृश्य' और 'बदलते परिप्रेक्ष्य' उनकी महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तकें हैं। उन्होंने करीब 65 वर्ष के साहित्यिक जीवन में करीब 25 पुस्तकें लिखी थीं।

उनके अन्तिम संस्कार के समय बड़ी संख्या में लेखक, रंगकर्मी और बुद्धिजीवी सम्मिलित हुए, मुख्यत: सर्वश्री नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, राजेन्द्र यादव, मृणाल पांडे आदि।

ओ०वी० विजयन नही रहे

मलयालम के सुप्रसिद्ध लेखक और व्यंग्य चित्रकार **ओट्टपुलक्कल वेलुकुट्टी विजयन** का जन्म 2 जुलाई 1930 को हुआ था। 'खसकिन्ते इतिहासम', 'धर्मपुरनम्', 'विजयन्ते कथाकाल' आदि आपकी प्रमुख साहित्य कृतियाँ हैं। आपके कार्टून भी पुस्तकाकार प्रकाशित हुए हैं। आपकी रचनाओं के अंग्रेजी अनुवाद भी हुए हैं। आपको 'पद्मभूषण' सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए। केरल सरकार ने कोची के निकट पलक्कड़ में उनके जन्म स्थान पर राजकीय सम्मान से उनकी अन्त्येष्टि की व्यवस्था की।

देवेन्द्र जैन

भारतीय इतिहास तथा प्राच्य विद्या ग्रन्थों के प्रमुख प्रकाशक मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली के निदेशक **श्री देवेन्द्र जैन** का बुधवार, 16 मार्च 2005 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया।

जिस घर में अच्छी पुस्तकें नहीं हैं, वह घर वास्तव में घर कहलाने योग्य नहीं, वह तो जीवित मुर्दों का कब्रिस्तान है। **—सुकरात**

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि
डॉ० रामचन्द्र तिवारी

द्वितीय संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-390-8
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी

मूल्य : 150.00

'आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि' ने बहुत प्रभावित किया, प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के साक्ष्य के आधार पर आलोचकों के नवीन योगदान का मूल्यांकन करना निश्चय ही एक नयी दृष्टि से किया गया कार्य है जिसका व्यापक स्वागत होना चाहिए।

—विष्णुकान्त शास्त्री
पूर्व राज्यपाल, हिमाचाल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

यत्र-तत्र-सर्वत्र

शिक्षा का माध्यम सिनेमा

सिनेमा का टी०वी० के माध्यम से घरों में प्रवेश है ही, अब सिनेमा का प्रवेश स्कूलों में भी होने जा रहा ह। एन०सी०ई०आर०टी० के निदेशक कृष्णकुमार के अनुसार बच्चों के लिए फिल्म शिक्षा की प्रभावशाली माध्यम है। आगामी जुलाई से दिल्ली के स्कूलों में फिल्में दिखायी जायँगी। सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल टेक्नालाजी शिक्षाप्रद फिल्मों का निर्माण कर रही है। लगता है अब श्रव्य और दृश्य ही ज्ञानार्जन के माध्यम रहेंगे। पुस्तकें छात्रों से दूर होती जायँगी। पुस्तकें विचार, चिन्तन और स्मृति का सृजन करती हैं। फिल्मों का चमत्कारिक प्रभाव अवश्य होता है पर स्थायी नहीं।

मीरा पंचशती समारोह

मीरा पंचशती समारोह गुजरात विद्यापीठ गाँधी संस्था के परिसर में 19-20 फरवरी, 2005 को 'गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी' एवं गुजरात विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में मीरा संगोष्ठी आयोजित हुई। मंगलाचरण और मीरा-भजन की प्रस्तुति के पश्चात् कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मीरा काव्य के विशेषज्ञ डॉ० दयाकृष्ण विजयवर्गीय ने कहा कि मीरा की वेदना ही उनकी भक्ति के रूप में दिखाई देती है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए, हिन्दी साहित्य परिषद के अध्यक्ष डॉ० अम्बाशंकर नागर ने कहा कि देश के महान कवियों में जितनी लोकप्रियता मीरा को मिली उतनी अन्य किसी कवि को नहीं।

अमरीका के बर्कले विश्वविद्यालय के डॉ० वसंत जोशी ने कहा कि मीरा प्रेम दीवानी थीं, उन्होंने कृष्ण के प्रेम में समाज की परवाह नहीं की। गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ० चन्द्रकान्त मेहता ने कहा ''मीरा का व्यक्तित्व विद्रोही था''।

इस समारोह एवं संगोष्ठी की आयोजक डॉ० मालती दुबे ने समग्र कार्यक्रम का सुन्दर संचालन किया तथा समापन करते समय उन्होंने कहा—''हिन्दी एवं गुजराती भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार में इस कार्यक्रम से अधिक बल मिलेगा।'' क्योंकि मीरा ने स्वयं ही कहा है—

असुँअन जल सींचि सींचि प्रेम बीज बोई।
अब तो बेलि फैलि गई आनंद फल होई॥

तमिल उत्कृष्ट भाषा

तमिल को 'उत्कृष्ट भाषा' दर्जा मिले छह महीने गुजर चुके हैं। इतना वक्त बीत जाने के बाद अब डीएमके ने इस भाषा को सरकारी स्थान दिलाने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। तमिल को राज्य विशेष ही नहीं बल्कि देश भर में आदर्श भाषा बनाने का अभियान है। इस अभियान का उद्देश्य यह है कि तमिल को केन्द्र में भी आधिकारिक भाषा की हैसियत दी जाए। यह माँग है कि केन्द्र और राज्य के बीच राज-काज सम्बन्धी किसी भी तरह का संवाद क्षेत्रीय भाषा के बीच ही होना चाहिए।

कथन

सांस्कृतिक हमले का नया रूप

भारत का मन आहत है। राष्ट्रजीवन बेहद अश्लील हो गया। सौन्दर्य ऐंद्रिक हो गया। इन्द्रियाँ देह हो गईं। देह काम हो गया। काम दाम हो गया। राम नाम की जगह दाम-नाम सत्य हो गया। पूँजी ब्रह्म हो गई। परिवार बाजार हो गए। जन्मदात्री स्त्री वस्तु हो गयी। वही विज्ञापन का माध्यम बनी। वह तम्बाकू, ट्रैक्टर, पेन, कार और दाद-खाज की दवाओं के प्रचार में अपनी देह दिखाने लगी और महँगी दारू के एक विज्ञापन में वह 'कुछ भी हो सकता है' की पैरोकार बनी। संस्कृति 'कामसूत्र' का विज्ञापन बन गई। भारतीय मर्यादा, लज्जा और शील का एक त्रासद चीरहरण जारी है, लेकिन इस चीरहरण में महाभारत की द्रोपदी वाला प्रतिकार नहीं है। नई द्रोपदियाँ अपना दुपट्आ खुद उतार रही हैं कि 'बेजा क्या है, हमारी देह और हम सुन्दर हैं तो लोगों को दिखाने में हर्ज ही क्या है ?' सो देह दिखाने और देखने की होड़ है।

देह व्यक्ति से परिवार, परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से अनंत तक को एक एकात्म तक देखने का माध्यम थी। देह धर्मसाधना का उपकरण थी। बाजार ने देह को उपभोक्ता वस्तु बनाया। संस्कृति और देह का नाता टूटा।

❑ ❑ ❑

दांडी यात्रा

स्वाधीनता संग्राम में सारा देश लड़ा। यह एक सांस्कृतिक महासंग्राम था। कांग्रेस सारा श्रेय ले उड़ी। लगभग 45 वर्ष की सत्ता भोगकर सम्प्रति वह फिर सत्ता में है तो भी अब गाँधी के दांडी मार्च की स्मृति का श्रेय भी अकेले ही ले लेना चाहती है। स्वाधीनता संग्राम की श्रुति, प्रकृति और संस्कृति की स्मृति से जुड़े किसी भी उत्सव में सबका हिस्सा होना चाहिए।

—हृदयनारायण दीक्षित

पाकिस्तान से दांडी यात्रा में भाग लेने लोग आये, क्या वे अन्य गैर कांग्रेसी भारतवासियों से अधिक देशभक्त हैं।

भारतीय भाषाओं के लेखकों से संवाद साहित्य अकादमी परिसर में

हमारी साहित्य परम्परा में युगों-युगों से कविता प्रधान रही है लेकिन इधर एक बदलाव हो रहा है। जिससे संकेत मिल रहा है कि इस वक्त हम कथा साहित्य की तरफ जा रहे हैं। **—प्रो० गोपीचंद नारंग**

वैश्वीकरण भाषाओं, संस्कृतियों और कविता का शत्रु है। उसका स्वप्न एक ऐसी मनुष्यता है जो उसी से गाँव में बसती है। उन्होंने कहा कि अपने समय की कविता पर सोचते समय पाब्लो नेरुदा की यह बात ध्यान आती है कि 'कविता' आदिमी के भीतर से निकली एक गहरी पुकार है। उसी से उपासना पद्धतियाँ निकलीं, भजन और धर्म के तत्त्व भी। **—वीरेन डंगवाल**

स्थानीयता एक महसूस किया गया यथार्थ है जबकि ग्लोबल सिर्फ वर्चुअल है। संस्कृति ऊपरी आवरण नहीं है बल्कि सभ्यता के धरातल है और मस्तिष्क केन्द्रित वस्तु है, जिसे अलगाया नहीं जा सकता। यह एक आजाद पंछी की तरह है जो स्वेच्छा से उड़ता रहता है, जो राष्ट्रों के कृत्रिम सीमाओं का अतिक्रमण करता है। **—अय्यप्प पणिक्कर**

दो मुल्कों के बीच नफरत में पचास वर्ष गुजर गये। नई नस्ल को इस तरह से तैयार करना है कि वह तल्खी और नफरत से दूर रहे। अगर हम करीब आना चाहते हैं तो समझौता करना होगा वरना इसी रस्साकशी में पचास साल और गुजर जायेंगे। भारत और पाकिस्तान की सरकार ने 'समझौता-एक्सप्रेस' की शुरुआत की थी जो अब बन्द हो चुकी है लेकिन इन दोनों देशों के साहित्यकार जो साहित्य के माध्यम से सद्भावना की समझौता एक्सप्रेस चला रहे हैं वह कभी बन्द नहीं होगा। हम लेखक प्यार में तराने गाते हैं, आपसी दूरी को मिटाने के लिए खून-पसीना बहाते हैं लेकिन राजनेताओं का एक बयान सब बहा ले जाता है। उन्होंने सवाल किया कि क्या यह सिर्फ हमारे ही जिम्मे है कि वे जख्म लगाते रहें और हम पट्टियाँ बाँधते रहें। आप मोहब्बत का वादा करते हैं तो यह दोतरफा होता है।

—पाकिस्तानी साहित्यकार अहमद फराज

राजनीति और साहित्य का सम्बन्ध अलग-अलग नहीं है। हमारी सरहदों का अपना महत्त्व है। दक्षिण एशिया में हमारी ओर बाहरी देशों की राजनीति का एक दूसरे पर प्रत्यक्ष असर होता है। साहित्य के बारे में यह धारणा नहीं होनी चाहिए कि वह राजनीति से अलग चलता है। हाँ, साहित्य की एक जगह है और ऐसी गोष्ठियों का भी इसलिए महत्त्व है क्योंकि इनसे अच्छा वातावरण बनता है। इससे धीरे-धीरे दिल बदलते हैं। कई बातें जो राजनीति हल नहीं कर सकती उन साहित्य के जरिए कुछ असर हो सकता है। दक्षिण एशिया के देशों में भारत का स्थान इतना बड़ा है कि उसकी बाकी देशों से बराबरी नहीं की जा सकती। इसलिए उसे एहतियात बरतना होगा। **—हरीशत्रिवेदी**

दुनिया जितना सिकुड़ रही है, अदीब की जिम्मेदारी बढ़ रही है। आज वह अपने क्षेत्र तक ही सीमित नहीं बल्कि पूरी दुनिया के दु:ख-दर्द को सामने लाना भी उसका कर्त्तव्य हो गया है। तमाम इमारतें मिट जाती हैं लेकिन बड़े अदीब की लिखी रचनाएँ कभी खत्म नहीं होतीं। साहित्य अकादेमी की 22 भाषाओं में पाँच भाषाएँ पाकिस्तान से ताल्लुक रखती हैं।

—पाकिस्तानी लेखिका जाहिदा हिना

सूर्यवंश का प्रताप
राजेन्द्रमोहन भटनागर

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-902534-6-8
अनुराग प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 190.00

इस उपन्यास की संदर्भित अन्तर्यात्रा का अभिलक्ष्य, महाराणा प्रताप की सम्पूर्ण समग्रहा औ' विस्थापित व निरूपित मूल्यों का अभि-चिन्तन ही इकी संस्कारिकता का प्रमुख अभीष्टहै।

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' साहित्य जगत की हलचलों को सहज, सरल और सार्थक टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत कर साहित्यिक चेतना जगाने में भूमिका निमाता है और साथ ही उनके सावधान और सचंत भी करता है जो साहित्य को धन्धा बनाकर उल्लू सीधा करने में लगे होते हैं। 'स्वतंत्र भारत में मैकाले का पुनर्जन्म' पर बहस जरूरी है। चन्द स्वार्थी तत्त्व अंग्रेजियत को बनाये रखकर अनेक को गरीब, बेरोजगार और हीनता ग्रन्थि का शिकार बनाये रखना चाहते हैं। इस कुचक्र का भण्डाफोड करने में आपका सम्पादकीय सफल है। 'प्रेमचंद का निवास राष्ट्रीय स्मारक नहीं बनेगा' के माध्यम से आपने उन तत्त्वों को बेनकाब किया है जो साहित्य को घुन की तरह चाट रहे हैं। उन्हें सिर्फ 'स्व' की याद रहती है। प्रेमचंद/प्रसाद से क्या करना है ? साहित्यिक सूचना और विश्लेषण की इतनी अच्छी पत्रिका के लिए बधाई। **— डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी**
जंगलीघाट, पोर्टब्लेयर, अण्डमान

'भारतीय वाङ्मय' के मार्च अंक से पं० विद्यानिवास मिश्र तथा पं० सीताराम चतुर्वेदी के निधन के दु:खद समाचार मिले। मिश्रजी का बहुआयामी वैदुष्य तो सर्वत्र चर्चित रहा किन्तु चतुर्वेदीजी के लेखन से सम्भवत: नई पीढ़ी पूर्णतया परिचित नहीं होगी। विक्रम की नई शताब्दी के प्रवेश वर्ष में उन्होंने समग्र कालिदास ग्रन्थावली को मूल तथा टीका सहित प्रकाशित कर एक ऐतिहासिक कार्य किया था। उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय से उस समय हिन्दी में एम०ए० किया था जब इस विश्वविद्यालय में महामना मालवीयजी ने इसकी एम०ए० कथा आरम्भ की थी। उस समय चतुर्वेदीजी के गुरु रहे थे—डॉ० श्यामसुन्दर दास, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय तथा लाला भगवानदीन। अपने इन चारों गुरुजनों के वैयक्तिक संस्मरण चतुर्वेदीजी ने सहारनपुर से निकलने वाली एक अनियतकालीन पत्रिका में प्रकाशित कराये थे। चारों महारथियों की निजी विशेषताएँ, वैयक्तिक अभिरुचियों तथा शैक्षिक अवदान का रोचक विवरण इन लेखों में दिया गया था।

ध्यातव्य है कि डॉ० श्यामसुन्दरदास बी०ए० थे, शुक्लजी इण्टर तक पढ़े थे किन्तु ड्राइंग में कुशल थे, हरिऔधजी नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण थे जबकि भगवानदीनजी ने कोई नियमित परीक्षा पास नहीं की थी। अब न रहे वैसे गुरुजन और चतुर्वेदीजी जैसे शिष्य। **— प्रो० (डॉ०) भवानीलाल भारतीय**
जोधपुर

'भारतीय वाङ्मय' के फरवरी 2005 के अंक में प्रेमचंद व प्रसादजी का रोचक प्रसंग अच्छा लगा इसी तरह आपके प्रयास से अन्य साहित्यकारों के जीवन प्रसंगों की रोचक अनछुये पहलुओं की जानकारी मन को गुदगुदाने वाली है। मैकाले का पुनर्जन्म के माध्यम से आपने जो भयावह स्थिति का अपने सम्पादकीय में उल्लेख किया है। निश्चय ही हम भारतीयों की दुर्दशा पर तथ्यपरख चिन्तन है विभिन्न साहित्य, साहित्यकारों व पुरस्कारों की जानकारी सराहनीय है।

— शम्भुनाथ सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
एसईसीएल, बिलासपुर

हिन्दीभाषी क्षेत्र व समाज की मुख्य साहित्यिक सूचनाएँ प्राप्त करना अपने आप में एक अनुष्ठान है। इसे पढ़ते हुए लगता है कि हिन्दी में सक्रियता है और हिन्दी के प्रति समर्पित लोग भी।

— डॉ० मालम सिंह, नई दिल्ली

मैकाले मरा ही नहीं

मैकाले का पुनर्जन्म तो तब होता जब वह 15 अगस्त 1947 को मर गया होता और 15 वर्ष तक उसे डायलिसिस पर रखने की बजाय तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा की तरह यह कह दिया जाता कि वह 15 वर्ष आज ही समाप्त हो गया। जिस भाषा (हिन्दी की) शक्ति के प्रयोग से अंग्रेज विदा हो गए। अंग्रेजों का राज समाप्त हो गया, वही हिन्दी स्वतन्त्र भारत में हिन्दुस्तानियों के राज में अंग्रेजी की चेरी बनी शासकीय दफ्तरों के द्वार पर बैठी है।

मैकाले की नीति को भारतीय शासन ने अपनी रीति बना ली है। आगे आने वाली पीढ़ी को मैकाले की ही भाषा में अपना भविष्य दिखता है।

— विद्यावाचस्पति (डॉ०) अमरनाथ शुक्ल
दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' हिन्दी में प्रकाशित होने वाली अनेक पत्रिकाओं से बिल्कुल अलग पत्रिका लगी। वैविध्यपूर्ण सामग्री ने एक अमिट छाप छोड़ी है, विशेष रूप से सम्पादकीय—'काशी की दो विभूतियों का निरोधन' ने। इसका एक-एक शब्द बोलता नज़र आता है। नीलाभ की 'हिन्दी साहित्य' कविता लाज़वाब है। बधाई ! **— डॉ० (श्रीमती) अनिलकुमारी,** मेरठ

भारतीय वाङ्मय
अनुरोध

'भारतीय वाङ्मय' विगत 5 वर्ष से साहित्यिक समाचार तथा शैक्षिक साहित्यिक समस्याओं की जानकारी आप तक पहुँचाता आ रहा है। हम इसे और उपयोगी बनाना चाहते हैं। अहिन्दीभाषी क्षेत्र के पाठकों में भारतीय वाङ्मय विशेष लोकप्रिय है। उन तक हिन्दी जगत के समाचार 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से पहुँचाते हैं।

अभी तक अनेक पाठकों की सेवा में इसे नि:शुल्क भेजा जाता रहा है। निरन्तर इसके लिए पाठकों के पत्र प्राप्त हो रहे हैं। हमारी विवशता है। इसे अब नि:शुल्क भेज सकना सम्भव नहीं हो पा रहा है। पाठकों से अनुरोध है कि वार्षिक शुल्क पचास रुपये भेजकर इसके ग्राहक बन जायँ।

निवेदक
अनुरागकुमार मोदी
प्रकाशक, भारतीय वाङ्मय

'स्मृति शेष : देवेश का दस्तावेज' के लेखक
डॉ० इन्द्रदेव सिंह का

पुण्य-स्मरण

इतिहास केवल तिथियों एवं घटनाओं से नहीं बनता वरन् चरित्रों से बनता है, जो उस काल के गौरव होते हैं। डॉ० इन्द्रदेव का व्यक्तित्व ऐसा ही था। जिन पर गर्व किया जा सकता है। उनकी सशक्तता, दृढ़ता, संकल्पशक्ति तथा कार्यकुशलता अद्‌भुत थी। सृजनात्मकता के पर्याय थे। मिट्‌टी में रहकर सोना तलाशना उनकी आदत थी, महाविद्यालय का सुरम्य परिवेश हो या उनकी साहित्यिक कृतियाँ सभी में उनके इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

—स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी विजयकुमार

डॉ० इन्द्रदेव सिंह एक महान कर्मयोगी थे उनका व्यक्तित्व स्वनिर्मित था। उन्होंने पूर्वांचल की विद्वत् परम्परा को एक नई परम्परा प्रदान की और यहाँ की ज्ञान परम्परा के पर्याय बन गये। छोटे से गाँव से आकर उन्होंने ज्ञान की तो पताका फहरायी वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी।

—डॉ० कुबेरनाथ मिश्र

डॉ० इन्द्रदेव सिंह का व्यक्तित्व काफी विराट होने के बावजूद अत्यन्त सरल था। उन्होंने कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया उनमें जीवनपर्यन्त सीखने की प्रवृत्ति थी। उनकी रचना सर्जता व निर्माण में समदृष्टि व समभाव था। डॉ० इन्द्रदेव जन हृदय से जुड़े व्यक्ति थे। **—रणधीर सिंह,** वरिष्ठ अधिवक्ता

सड़कों और गलियों की गोद में पलकर, मेहनत करके भी फटकार खाकर, खुले आसमान की सरपरस्ती में जीवन के सपने को हसीन बनाने की हसरत कम लोगों में हुआ करती है। यह डॉ० इन्द्रदेव में थी, जिसको गवाही स्वयं भुड़कुड़ा महाविद्यालय तथा साहित्य के क्षेत्र में उनका अवदान किया करता है।

—डॉ० के०एन० सिंह, प्राचार्य
पी०जी० कालेज, गाजीपुर

इन्द्रदेवजी की सबसे बड़ी खासियत थी कि वे कम अनुभव रखने वाले युवाओं की बातों को भी गम्भीरता से लेते थे। प्रकृति प्रदत्त प्रत्येक दु:ख का उन्होंने उच्च आत्मबल से सामना किया। त्याग, सहनशीलता व धैर्य उनके आभूषण थे। इन्हीं सद्‌गुणों की वजह से वह पूजनीय भी हैं और अनुकरणीय भी।

—डॉ० सत्येन्द्र सिंह, प्राचार्य
पी०जी० कालेज, गरुआ मकसूदपुर

पुस्तक समीक्षा

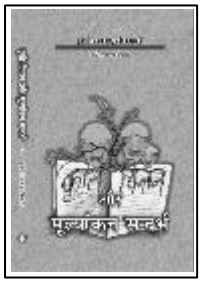

कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-401-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 200.00

'कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ' डॉ० रामचन्द्र तिवारी की अभिनव आलोचनात्मक कृति है। कृति में कुल तेईस कृति और कृतिकारों की आलोचन निर्भर प्रस्तुतियाँ हैं। सर्वाधिक लेख डॉ० रामविलास शर्मा एवं उनकी मान्यताओं पर केन्द्रित हैं। डॉ० शर्मा की मार्क्सवादी दृष्टि से किए जानेवाले चिन्तन से प्रसूत अनेक विचारोत्तेजक मान्यताएँ हैं। हिन्दी जाति की अवधारणा, जातीयता की पहचान भाषा, इस अवधारणा से हिन्दी साहित्य के इतिहास के ढाँचे का प्रभावित होना, एण्डरसन का प्रतिवाद, आर्यों का मूलत: भारतीय होना, निराला का यथार्थवादी दृष्टि से आकलन, उनकी इतिहास-दृष्टि, इतिहास की अपेक्षा 'परम्परा' का महत्त्वापादन आदि उनकी मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए डॉ० रमेशचन्द्र शाह तथा डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी की जातीयता परिचायक अन्यथा अवधारणाओं से अन्तर भी निरूपित किया गया है। भक्तिकाल की चारों शाखाओं के प्रतिनिधि रचनाकारों—कबीर, जायसी, सूर तथा तुलसी—पर भी डॉ० तिवारी ने अपने विचार रखे हैं। पदार्थवादी भक्ति को आन्दोलन का रूप दे सकते हैं परन्तु आत्मवादी उसे एक गन्तव्यगामी आध्यात्मिक प्रस्थान मानते हैं। इनकी दृष्टि में भक्ति पंचम पुरुषार्थ है। जायसी यदि भक्ति धारा के प्रतिनिधि रचनाकार हैं तो उनकी काव्यवस्तु या कथा को समासोक्ति नहीं अन्योक्ति कहना चाहिए। वे प्रकट तो लोकाचार की बात करते हैं—पर चेतना के संकेन्द्रण को गुप्त रखना चाहते हैं। डॉ० तिवारी ने कई लोगों की इतिहास दृष्टि का साधार उपस्थापन किया है। इन सबके साथ बूँद और समुद्र—जैसे उपन्यास की चर्चा करते हुए उन्होंने काव्यशास्त्र के पक्षधरों डॉ० रघुवंश तथा मेरी कृतियों का भी सांगोपांग विवेचनात्मक आकलन-मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर समस्त जटिल रचनाओं की व्याख्यात्मक प्रस्तुति स्वतंत्र वृहदाकार पुस्तक की अपेक्षा करती है जो यहाँ सम्भव नहीं हो सकी। कतिपय रचनाओं को ही बानगी के रूप में लिया जा सकता है। व्याख्या के लिए मूल है प्रातिभ पैठ-औजार तो उसके राज्य में खट-खट करते रहते हैं। लोक मंगलवाली शुक्लजी की धारणा भारतीय दार्शनिक शब्दावली के गुंजलक में निमग्न है। कुल मिलाकर कृति की उपादेयता नि:संदिग्ध है।

—डा० राममूर्ति त्रिपाठी

वटवृक्ष की छाया में

डॉ० कुमुद नागर

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-346-0
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 190.00

कथाशिल्पी अमृतलाल नागर के रचना संसार को समझने के लिये उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है, इस दृष्टि से यह संस्मरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह कहा जा सकता है कि लेखक ने अपने दादाजी तथा अपने पिताश्री की सम्पूर्ण कलात्मक प्रतिभा विरासत में पाई है, इस दृष्टि से लेखक का आत्मकथ्य भी अलग महत्त्व रखता है। इस पुस्तक ने मुझे अभिभूत कर लिया।

—ज्ञानचन्द जैन

'वटवृक्ष की छाया में' पुस्तक सुयोग्य पुत्र की अपने सुयोग्य पिता को श्रद्धांजलि है। सुयोग्य पुत्र हैं लेखक, निर्देशक, अभिनेता, मूर्तिकार, चित्रकार और छायाकार कुमुद नागर। सुयोग्य पिता हैं कलमकार पण्डित अमृतलाल नागर, जिन्हें परिचय की कभी दरकार नहीं रही। 'वटवृक्ष की छाया में' एक ओर नागरजी की जीवन-कथा है, दूसरी ओर नागर-परिवार की चार पीढ़ियों का लेखा-जोखा भी है, जिसे कुमुद नागर ने पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

—अमृत खरे

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प

विश्वनाथ पाण्डेय
पूर्व निदेशक, आकाशवाणी

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-408-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 250.00

रेडियो विश्व का प्रमुख सम्प्रेषण माध्यम अपने उदय काल से ही रहा है और आज भी टी०वी० के अतिशय विकास के बावजूद भारत ऐसे देश में जहाँ कतिपय कारणों से टी०वी० की पहुँच देश की बहुसंख्यक जनता तक नहीं है, रेडियो ही एकमात्र माध्यम है जो जनमानस को समाचार, शिक्षा तथा मनोरंजन प्रदान करता है।

पिछले दिनों सुनामी लहरों के कहर ने जब अण्डमान-निकोबारवासियों को कुछ समय के लिये दुनियाँ से अलग-थलग कर दिया था, तब उस क्षेत्र में कार्यरत एकमात्र सम्प्रेषण माध्यम रेडियो ने बिछड़े और बिछुड़े लोगों को जोड़ने का कार्य किया। स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र ने हजारों-हजार प्रभावित परिवारों के लिये सन्देश प्रसारित किये और उस प्राकृतिक आपदा से लड़ने की शक्ति प्रदान की। इससे जान और माल दोनों को, आसन्न कहर से बचाया जा सका। आकाशवाणी वस्तुत: कई दिनों तक वहाँ के निवासियों के लिए 'आकाशवाणी' ही सिद्ध हुई। आकाशवाणी के माध्यम से प्रसारित और प्राप्त होने वाली सूचनाएँ द्वीपवासियों के जीवन की सम्बल बनीं।

आज आप मात्र एक छोटे से ट्रान्जिस्टर के माध्यम से क्षणभर में देश और दुनियाँ से जुड़ सकते हैं। रेडियो अगर आपके पास है तो पूरी दुनियाँ आपके पास है। एक निर्जन क्षेत्र में भी आप संसार भर के समाचार सुन सकते हैं, जान सकते हैं। यह अपने आप में एक अनोखा और अद्‌भुत आविष्कार है। विगत वर्षों में इस देश में और विश्वस्तर पर भी रेडियो ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति को दिशा दी है। आज के रेडियो को जनमानस की आस्था का प्रतीक और चेतना का संवाहक बनना होगा।

रेडियो के प्रसारण के विभिन्न आयाम हैं। माइक्रोफोन से रेडियो (ट्रान्जिस्टर) तक की यात्रा अत्यन्त रोमांचक है। 'एकोऽहं बहुस्याम' का अनुसरण करते हुए रेडियो बहुरूप में प्रकट होता है। अत: इसके विभिन्न अंगों एवं ध्वनि की यात्रा का अध्ययन अपने आप में अत्यन्त आह्लादकारी है।

प्रस्तुत पुस्तक रेडियो के सभी पक्षों का अत्यन्त गहराई से अध्ययन प्रस्तुत करती है। और जीवन के लिये सम्प्रेषण की आवश्यकता को भी उजागर करती है।

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ

प्रो० कुसुमलता केडिया
प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-372-X
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 180.00

नारी मुक्ति आन्दोलन के जोर पकड़ने के साथ ही स्त्री विमर्श बीसवीं सदी के समस्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्शों का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। स्त्री प्रश्न को लेकर विपुल सृजन हुआ है जिसमें इस समस्या का सांगोपांग अध्ययन प्रस्तुत करने के गम्भीर व उपयोगी प्रयास हुए हैं। प्रो० कुसुमलता केडिया एवं प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र की नयी पुस्तक 'स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ' में नारी से जुड़े विविध पक्षों को हिन्दू दृष्टि से समझने तथा परखने की (सभ्यतामूलक विमर्श) कोशिश की गई है।

नौ अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक की भूमिका में तथा अन्यत्र भी लेखकद्वय ने इस बात पर बल दिया है कि वर्तमान स्त्री-विमर्श तथा उसके प्रमुख मुद्दे अनिवार्यत: योरोपी तथा ईसाइयों द्वारा तय किये गए हैं तथा इसका भारत सहित अन्य गैर यूरोपीय एवं ईसाई समाजों से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेखकद्वय ने नारी की

स्वतंत्रता एवं समानता की बहुचर्चित अवधारणा को आधुनिक काल की विशेषता नहीं माना है तथा इसे मध्यकालीन यूरोप में चर्च के दमन से मुक्ति की योरोपीय महिलाओं की उपलब्धि भर माना है। पुस्तक के पहले अध्याय में विश्व की अनेक मातृ सत्तात्मक सभ्यताओं का उल्लेख है जिन्हें कथित रूप से यूरोपवासी ईसाइयों ने नष्ट कर दिया। पुस्तक में हिन्दू धर्मग्रन्थों तथा शास्त्रीय परम्पराओं के आधार पर प्राचीन भारत में स्त्रियों की दशा दिशा का रूमानी चित्र खींचा गया है। यद्यपि इन ग्रन्थों में नारी निन्दा के प्रमाणों की प्रचुरता के कारण उभय पक्षों—प्रशंसा व निन्दा, को सम्मिलित किया गया है। पुस्तक में जहाँ ईसाइयत के चलते कथित रूप से उत्पन्न स्त्रीहीनता की प्रक्रिया तथा इसके विरुद्ध योरोपीय महिलाओं की संघर्ष यात्रा का लेखा-जोखा दिया गया है वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज द्वारा स्त्री की आरोपित छवि को आत्मसात् करने की दास्तान को भी लिपिबद्ध किया गया। पुस्तक की रचना का एक मुख्य उद्देश्य स्त्री सम्बन्धी पश्चिमी अवधारणाओं का खण्डन कर 'यत्र नार्येस्तु पूज्यते.....' के भारतीय आदर्श का महिमा मण्डन करना है।

—हर्षवर्धन राय, *हिन्दुस्तान से*

साधना और सिद्धि

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2003

ISBN : 81-7124-332-0

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

यह योग और साधना-विषयक अनूठी कृति है। इसमें योग और साधना से संबद्ध सभी विषयों का सांगोपांग विवेचन है। भारतवर्ष की इस प्राचीन रहस्य-विद्या के द्वारा ही मनुष्य शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का विकास करके अनेक दिव्य सिद्धियाँ और विभूतियाँ प्राप्त कर सकता है। इस ग्रन्थ में योग विद्या का संक्षिप्त विशद वर्णन है।

यह ग्रन्थ 10 अध्यायों में विभक्त है। अध्याय 1 में योग के 8 अंगों का वर्णन है। साथ ही ज्ञानयोग, कर्मयोग, अभियोग, और हठयोग की रूपरेखा दी गई है। अध्याय 2 में शरीर-स्थान के वर्णन में मस्तिष्क, हृदय, नाड़ी-तन्त्र आदि का तथा सात चक्रों का वर्णन है। अध्याय 3 में उपयोगी सभी आसनों और नेति-धौति आदि की विधि दी गई है। अध्याय 4 में प्राणायाम और मुद्राओं का वर्णन है। अध्याय 5 में प्रत्याहार और धारणा की विधियों का विवेचन है। अध्याय 6 में विविध ध्यान-पद्धतियों का वर्णन है। अध्याय 7 में मन, बुद्धि आदि के कार्यों का वर्णन है। अध्याय 8 में कुण्डलिनी-जागरण और समाधि की विधियाँ दी हैं। अध्याय 9 में 155 दिव्य ज्योतियों के दर्शन की विधि दी है। अध्याय 10 में 50 प्रमुख रोगों की चिकित्सा-विधि दी है।

यह ग्रन्थ योग एवं साधना के प्रेमियों के लिए अपूर्व उपहार है।

समर्थ रामदास

ना०वि० सप्रे

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-902534-5-X

अनुराग प्रकाशन वाराणसी

मूल्य : 50.00

समर्थ गुरु रामदास महाराष्ट्र के सिद्ध सन्त थे। ये शिवाजी महाराज के गुरु थे। भारत परम्परा में संन्यासी स्वयं युद्ध न कर शिष्य को युद्ध शिक्षा एवं प्रेरणा देते थे। शिष्य को स्वतंत्रता का निमित्त बनाते थे। समर्थ भी ऐसे ही गुरु थे। उन्होंने छत्रपति शिवाजी को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी। समर्थ ने अनेक स्त्रियों को प्रतिष्ठित किया।

यह लघुकाय पुस्तक समर्थ को जानने-समझने में सक्षम है। भाषा सरल एवं प्रभावशाली है।

खबर की औकात

बच्चन सिंह

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-406-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

मूल्य : 300.00

'खबर की औकात' एक तरह से आत्मवृत्तात्मक उपन्यास है। लेखक ने इस उपन्यास में एक दफ्तर की अंतर्व्यथा के माध्यम से प्रबन्ध तंत्र एवं सम्पादक नाम की संस्था के द्वंद को उजागर किया है। पिछले दो दशक में धीरे-धीरे सम्पादक नाम की संस्था का मीडिया जगत में पराभव हुआ एवं प्रबन्धतंत्र ही खबरों की नीतियाँ भी तय करने लगा। अखबार में समाचारों की संवेदनशीलता समाज निर्माण में उनकी भूमिका, पाठकों को विवेकशील बनाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के स्थान पर धीरे-धीरे विज्ञापन, प्रसार एवं आर्थिक लाभ ने ले लिया। ऐसे में स्वाभाविक था कि सम्पादक के स्थान पर ऐसे प्रबन्ध कौशल को महत्त्व मिला, जो येन केन प्रकारेण अखबार की आमदनी बढ़ा सके और सम्पादक की भूमिका अखबार को अधिक से अधिक आकर्षक, सनसनीखेज, बारगेनिंग क्षमता से युक्त बनाने तक सीमित होती गयी। इसी दौर में ऐसा सम्पादक वर्ग भी उभरा जिसने बहती गंगा में हाथ धोने का फार्मूला अपनाया और प्रबन्धन के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगा। लेकिन पत्रकारिता को कमोवेश एक मूल्य भी मानकर चलने वालों के लिए यह स्थिति माकूल नहीं थी और धीरे-धीरे ऐसे लोगों की सफाई शुरू हो गयी। लेखक ने इसी बिन्दु को उपन्यास के केन्द्र में रखा है, जैसा कि उपन्यास के शीर्षक 'खबर की औकात' से ही स्पष्ट हो जाता है। इस उपन्यास में कोई अध्याय नहीं है। उपन्यास आदि से प्रारम्भ होता है, जिसमें पाठक का परिचय विद्याधर और लालधर से होता है, जो एक सूत्रधार की तरह बीच बीच में आते हैं और अखबार की भीतरी दुनिया पर अपनी बेबाक टिप्पणी देते हैं। उपन्यास का मूल प्रश्न इसी 'आदि' में आ जाता है—''विद्याधर और लालधर एक बड़े अखबार में बण्डल बाँधते थे। एक दिन चाय की दुकान में बैठे-बैठे दोनों में बहस छिड़ गयी। बहस इस बात को लेकर थी कि खबर की औकात कौन ठीक-ठीक कूतता है, मैनेजर या सम्पादक, लालधर का कहना था कि मैने खबर की औकात ठीक पहचानता है, जबकि विद्याधर सम्पादक के पक्ष में थे। इस बहस के दौरान एक सवाल उठा, यदि मैनेजर ही सम्पादक बन जाए तो ?''यह प्रश्न आदि में उठता है और इसके उत्तर की प्रक्रिया पूरे उपन्यास में धीरे-धीरे पूरी होती है। इस प्रक्रिया में पत्रकारिता जगत का पूरा चेहरा धीरे-धीरे अनावृत्त होता है। यही वह तत्त्व है, जो इसे आत्मवृत्त से उपन्यास में परिवर्तित करता है।

—संजय गौतम, *गाण्डीव से*

आषाढ़स्य प्रथम दिने

(कविता संग्रह)

मूल लेखक

नारायण सुमंत

अनुवादक

गिरीश काशिद

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-407-6

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 80.00

'आषाढस्य प्रथम दिने' मराठी कवि नारायण सुमंत की कविताओं का संकलन है। नारायण सुमंत खेत में हल चलाने वाले, बैलों के साथ मशक्कत करने वाले किसानों पर कविता लिखने वाले कवि हैं। जीना और लिखना इसमें तादात्म्य होने वाला मराठी साहित्य विश्व का एक दुर्लभ सन्दर्भ उनमें पाया जाता है।

भूमण्डलीकरण और डंकेल प्रस्ताव के पश्चात भारतीय कृषि के प्रश्नों के परिणाम ही बदल गए। यह दुर्भाग्य है कि नये प्रश्न मराठी साहित्य में अधिकतर प्रतिबिम्बित नहीं हो पाए। आज जिस गति से भूमण्डलीकरण का लोढ़ा घूम रहा है, उसकी गति को साहित्य पकड़ नहीं पा रहा है, यह हमारी विवशता है। इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह सौभाग्य है कि सुमंत की कविता इन सभी पहलुओं को स्पर्श करती है।

संग्रह में प्रकाशित कुल बयालीस कविताओं को पढ़ते हुए सुमन्त की ठेठ ग्रामीण संवेदना है वैश्विक परिवेश में किसान के संक का अहसास बराबर होता रहता है। सुमंत ग्रामीण बोली, खेती की प्रक्रिया और ठेठ मुहावरों से कविताएँ रचते हैं, जिस तरह हिन्दी में धूमिल की कविताओं में ग्रामीण

मुहावरों एवं शैली का प्रयोग मिलता है। उनकी कविता 'फिर एक बार' में किसानों की निरन्तर पराजय की पीड़ा का अहसास व्यक्त हुआ है—पराजय के नाम पर भी / नहीं तुम्हारा कोई इतिहास। उसके लिए भी करनी पड़ती है लड़ाई / पहले कभी तो / पढ़ा था बखर में / हँसिया और गँड़ासे ही / बने थे तलवार / लेकिन जीतते रहे राजा / तुम तो हमेशा बने रहे सैनिक / दुर्ग पर मनाए हर्षोल्लास विजयी तोपों की आवाज से / लेकिन तुम्हारा गिरवी नाम / साबूत ही रहा साहूकार के पास / सत्तान्तरण में भी / और अब लगता है। स्वयं को ही जोतना पड़ेगा /फिर एक बार। (पृ० 1) 'रिश्ता' शीर्षक कविता में एक किसान पिता की संवेदना को, जिसे बेटी की विदाई करनी है, बहुत ही व्यंजक भाषा में अभिव्यक्त किया गया है।

इस तरह हम देखते हैं कि नारायण सुमंत किसान जीवन के हर क्षेत्र को अपनी कविता में चित्रित करते हैं और उसके संकट की सूक्ष्म पहचान करके कविता को बाहरी दुनिया से भी उतना जोड़ देते हैं। इन कविताओं को पढ़ना और सरोकारों से अपने को जोड़ना ही है।

—संजय गौतम, *गाण्डीव से*

अघोर पंथ और संत कीनाराम

डॉ० (श्रीमती) सुशीला मिश्र

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-396-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 250.00

16वीं-17वीं शताब्दी के कालजयी औघड़ संत बाबा कीनाराम साक्षात् शिव थे। जनश्रुतियों के अनुसार शिव की नगरी काशी के शिवाला स्थित क्रीं-कुण्ड के औघड़ तख्त पर बाबा कीनाराम का सन् 1619 में अभिषेक हुआ था। उस समय उनकी उम्र मात्र 19 वर्ष थी। अभिषेक से पूर्व वे अपने तपस्याकाल में माँ हिंगलाज के दरबार में अपनी तपस्या पूर्ण करने पहुँचे। वहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। माँ हिंगलाज ने प्रसन्न होकर कहा—''तू अब काशी जा। वहीं मैं भी आऊँगी और वहीं रहूँगी।'' यहाँ भैरव भीमलोचन ने भी उन्हें दर्शन दिये। माँ की आज्ञा से बाबा कीनारामजी काशी स्थित महाश्मशान हरिश्चन्द्र घाट आये। जहाँ दत्तात्रेय भगवान् के रूप में बाबा कालूरामजी ने औघड़ तख्त क्रीं-कुण्ड के पीठाधीश्वर पद पर बाबा कीनाराम का अभिषेक किया। कहा जाता है माँ हिंगलाज क्रीं-कुण्ड में हर पल अदृश्य स्वरूप में विद्यमान हैं। बाबा कीनाराम अघोरपंथ के सूत्र हैं। उनके अनेक चमत्कार हैं जो भक्तों को प्रभावित करते हैं, अघोरपंक्ष की यह परम्परा क्रीं-कुण्ड में आज भी साक्षात् है।

अध्यात्मपरक ग्रन्थ तथा धार्मिक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

प्रकाश पथ का यात्री	*योगेश्वर*	160.00
अघोर पंथ और संत कीनाराम	*डॉ० सुशीला मिश्र*	250.00
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150.00
करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवन्त शाह*	25.00
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवन्त शाह*	30.00
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग	*बच्चन सिंह*	250.00
नीब करौरी के बाबा	*डॉ० बदरीनाथ कपूर*	20.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह*	100.00
सोमबारी महाराज	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	50.00
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	60.00
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग	*राजबाला देवी*	20.00
समर्थ रामदास	*ना०वि० सप्रे*	50.00
योगी कथामृत	*परमहंस योगानन्द*	70.00
Autobiography of Yogi	*Paramhansa Yoganand*	100.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नन्दलाल गुप्त*	140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy	*N.L. Gupta*	400.00
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	50.00
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-6)	*विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)*	100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे*	120.00
महाराष्ट्र के कर्मयोगी	*ना०वि० सप्रे*	80.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	100.00
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	100.00
भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा	*डॉ० इन्द्रदेव सिंह*	180.00
पूर्वांचल के संत महात्मा	*परागकुमार मोदी*	60.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मकपरक ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना	80.00
क्रम-साधना	60.00
अखण्ड महायोग	50.00
श्री साधना	50.00
श्रीकृष्ण प्रसंग	250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	100.00
दीक्षा	80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा	120.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2)	70.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)	50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)	200.00
कविराज प्रतिभा	64.00
ज्ञानगंज	60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना	50.00
परातंत्र साधना पथ	40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1)	200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2)	120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	40.00
काशी की सारस्वत साधना	35.00
भारतीय साधना की धारा	30.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	120.00
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि	100.00
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग	20.00
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन	15.00
स्वसंवेदन	50.00
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड)	150.00

तंत्र-सिद्ध पुराण-पुरुष योगिराज श्यामचरण लाहिड़ी

पुराण-पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*	150.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree	*Dr. Ashok Kr. Chatterjee*	400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी	*शिवनारायण लाल*	150.00
धर्म और उसका अभिप्राय		80.00
प्राणमयं जगत	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	22.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद		100.00
आत्मबोध	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	30.00
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में)	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	375.00
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड)	*''*	375.00
आश्रम चतुष्टय	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	25.00
मोक्ष साधन या योगाभ्यास	*''*	15.00
दिनचर्या	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	15.00
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति	*''*	20.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

धन धन मातु गङ्ग	*डॉ० भानुशंकर मेहता*	250.00
गङ्गा : पावन गङ्गा	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25.00
कथा त्रिदेव की	*रामनगीना सिंह*	50.00
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	60.00
अयोध्या का राजवंश	*रामनगीना सिंह*	80.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय	*डॉ० डेविड फ्राली*	150.00
साधना और सिद्धि	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	250.00
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200.00

वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200.00
बृहत श्लोक संग्रह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	120.00
गुप्त भारत की खोज	*पाल ब्रंटन*	200.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*(अनु.) ना०वि० सप्रे*	180.00
कृष्णायन	*रामबदन राय*	200.00
श्रीमद् एकनाथी भागवत	*(अनु.) ना.वि. सप्रे*	600.00
शिव काशी	*डॉ० प्रतिभा सिंह*	400.00
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ	*डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा*	250.00
आसन एवं योग मुद्राएँ	*डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह*	250.00

ओशो साहित्य

डूबने का आमन्त्रण	125.00
शून्यता का जन्म	125.00
मृत्यु : सबसे बड़ा झूठ	55.00
तंत्र विज्ञान	75.00
कामवासना का रूपान्तरण	75.00
तंत्र और अंतस-शरीर	75.00
भोग और दमन के पार	75.00
तंत्र औषधि है	75.00
अन्धकार की साधना	75.00
असीम की अनुभूति	75.00
रहस्य में प्रवेश	75.00
परम आनंद के सूत्र	75.00
रसो वै सः	75.00
प्रेम का शिखर	75.00
प्रेम और ध्यान	95.00
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन	95.00
पण्डित, पुरोहित और राजनेता	75.00
आनंद की तलाश	75.00
मेरा मुझमें कुछ नहीं	75.00
शून्य की वीणा विराट के स्वर	75.00
प्रभु मन्दिर यह देह री	75.00
संभोग से समाधि की ओर (सम्पूर्ण संस्क.)	150.00
मैं मृत्यु सिखाता हूँ	150.00
भारत एक सनातन यात्रा	100.00
ध्यान की कला	60.00
अथातो भक्ति जिज्ञासा (शांडिल्य सूत्र)	100.00
कुण्डलिनी यात्रा	40.00
कुण्डलिनी और तंत्र	40.00
कुण्डलिनी जागरण और शक्तिपात	40.00
कुण्डलिनी और सात शरीर	40.00

संत रामचन्द्र केशव डोंगरेजी महाराज

श्रीमद्भागवत रहस्य	200.00

करपात्रीजी महाराज

रामायण-मीमांसा	250.00
भक्ति-सुधा	190.00
श्रीभागवत-सुधा	70.00
श्रीराधा-सुधा	50.00
गोपीगीत (दार्शनिक विवेचन)	200.00
भ्रमर-गीत	90.00
श्रीविद्या-रत्नाकर	140.00
श्रीविद्या वरिवस्या	70.00

रमण महर्षि

रमण महर्षि	*आर्थर ओसबर्न*	30.00
श्री रमण महर्षि से बातचीत	*वेंकटरमैय्या*	120.00
रमण महर्षि का उपदेश	*डेविड गॉडमेन*	175.00

जे० कृष्णमूर्ति

ज्ञात से मुक्ति	70.00
ध्यान	40.00
हिंसा से परे	90.00
गरुड़ की उड़ान	70.00
संस्कृति का प्रश्न	50.00
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य	60.00
शिक्षा संवाद	75.00
स्कूलों के नाम पत्र 1-2	100.00
सीखने की कला	15.00
आमूल क्रान्ति की आवश्यकता	60.00
अन्तिम वार्ताएँ	70.00
मृत्यु और उसके बाद	40.00
जीविका का प्रश्न	20.00
जीवन भाष्य (3 खण्डों में)	210.00

स्वामी अखण्डानंदजी महाराज

गीता रस रत्नाकर (सम्पूर्ण गीता)	75.00
भागवत दर्शन (दो भागों में)	400.00
भागवत-दशम स्कन्ध	150.00
मुक्ति स्कन्ध (भागवत-एकादश स्कन्ध)	150.00
रास पञ्चाध्यायी	65.00
श्रीकृष्णलीला रहस्य	40.00
भागवतामृत	60.00
रामचरित मानस प्रवचन (3 भाग में)	300.00
अध्यात्म रामायण	125.00
श्रीमद्वाल्मीकि रामायणामृत	50.00

रामकिंकरजी

मानस प्रवचन (33 भागों में) प्रत्येक भाग 25.00 से 35.00

मानस मुक्तावली (चार भाग)	35.00
मानस चरितावली (दो भाग)	35.00
नवधा भक्ति (दो भाग)	40.00

नोट : रामकिंकरजी की पुस्तकों के सभी भाग हर समय नहीं मिलते। उपलब्ध भाग की ही आपूर्ति की जा सकती है।

अरविन्द साहित्य

दिव्य जीवन	285.00
योग-समन्वय	240.00
गीता-प्रबंध	150.00
गीता-विज्ञान	100.00
वेद रहस्य	125.00
भारत का पुनर्जन्म	80.00
भारतीय संस्कृति आधार	150.00
मानव चक्र	115.00
सावित्री	165.00
ईशावास्योपनिषद	30.00
गीता का दिव्य सन्देश	60.00
श्री अरविन्द अथवा चेतना की अपूर्व यात्रा सत्प्रेम	140.00

रामकृष्ण

रामकृष्ण परमहंस : कल्पतरु की उत्सव लीला	*कृष्णबिहारी मिश्र*	380.00
परमहंस, फिर आओ	*सौ० शुभांगी भडभडे*	300.00
श्री रामकृष्ण लीला प्रसंग दो खण्ड	*स्वामी सारदानन्द*	125.00
रामकृष्णवचनामृत (दो खण्ड)		200.00
श्रीरामकृष्ण की अनन्य लीला		80.00
श्रीरामकृष्णदेव : जैसा हमने उन्हें देखा	*स्वामी चेतनानन्द*	100.00
श्रीरामकृष्ण भक्तमालिका (दो भाग)	*स्वामी गम्भीरानन्द*	80.00

विवेकानन्द

विवेकानन्द साहित्य (10 खण्ड)		600.00
स्वामी विवेकानन्द संचयन		40.00
युगनायक विवेकानन्द	*स्वामी गम्भीरानन्द*	2100.00
पत्रावली		80.00
भारतीय व्याख्यान		
स्वामी विवेकानन्द : एक जीवनी	*स्वामी निखिलानन्द*	45.00
भक्तियोग		15.00
प्रेमयोग		15.00
ज्ञानयोग		35.00
कर्मयोग		15.00
राजयोग		30.00
भारतीय व्याख्यान		285.00
विवेकानन्दचरित	*सत्येन्द्रनाथ मजूमदार*	55.00
तरुण संन्यासी	*राजेन्द्रमोहन भटनागर*	120.00

कला, संस्कृति, इतिहास, दर्शन

वैदिक संस्कृति	*डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे*	600.00
ज्ञान और कर्म	*विष्णुकान्त शास्त्री*	150.00
सोमतत्त्व	*कल्याणमल लोढ़ा*	100.00
मनुस्मृति	*रामचन्द्र वर्मा शास्त्री*	400.00
दुर्गा सप्तशती रहस्य	*आचार्य गंगाराम शास्त्री*	250.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन के बगल में

पो०बाक्स 1149, वाराणसी-221 001

फोन : (0542) 2413741, 2413082 ● फैक्स : (0542) 2413082

ई० मेल : vwp@vsnl.com ● ई० मेल : sales@vwpbooks.com ● Website : www.vwpbooks.com

पुस्तक-प्राप्ति

शब्द-निर्वाचन और शब्दार्थ

(तुलनात्मक भाषा विज्ञान एवं व्याकरण के आधार पर शब्द-व्युत्पत्तियाँ)

डॉ० वागीश शास्त्री

प्रकाशक : वाग्योग चेतनापीठम्
शिवाला, वाराणसी-221 001

मूल्य : 300.00

तिरुक्कुरल-धर्म तत्त्व

डॉ० इंदरराज बैद

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
त्यागराय नगर, चेन्नई-600 017

मूल्य : 100.00

तिरुवक्कुरल तमिल भाषा का गौरव ग्रन्थ है।

यह सूक्ति ग्रन्थ है। इसी सूक्तियों को विश्व-व्यापी मान्यता प्राप्त है और जन-जन में लोकप्रिय भी है। दो हजार वर्ष पूर्व रचित यह ग्रन्थ आज भी प्रासंगिक है। डॉ० बैद ने धर्मविषयक छन्दों का चयन कर मूल तमिल सहित नागरी लिप्यांतर करते हुए हिन्दी में पद्यानुवाद करते हुए विस्तृत टीका प्रस्तुत की है। ईश्वर, वृष्टि, संत, धर्म, सद्गृहस्थ, संयम, अस्तेय, अक्रोध आदि जीवनोपयोगी विषयक सूक्तियों को विविध साहित्यिक सन्दर्भों सहित परिभाषित किया है। पुस्तक प्रेरक और मार्गदर्शक है।

राजस्थान के लोक-देवी-देवता

डॉ० महेन्द्र भानावत

प्रकाशक : फतेहकृष्ण कल्ला
आयुक्त, देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार
उदयपुर-313 001

मूल्य : 150.00

राजस्थान शौर्य आस्था, श्रद्धा और प्रेम का प्रदेश है। जनहित तथा धर्महित कार्यों के कारण राजस्थान के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में लोक देवताओं का प्रमुख स्थान है। प्रवासी राजस्थानी राजस्थान के जिस क्षेत्र से गये हैं उनके साथ उनके लोक देवता भी गये हें जिनका स्मरण वे विभिन्न अवसरों पर करते हैं।

परिवार के धार्मिक संस्कारों के लिए राजस्थानी प्रवासी अपने बच्चों का मुण्डन राजस्थान में अपने लोक देवी-देवता के पूजा-स्थलों पर कराते हैं। इस पुस्तक में 71 लोक देवी-देवता का सचित्र (रंगीन) विवरण है। इनके अतिरिक्त 160 लोक-देवताओं और 206 लोक देवियों की सूची तथा अल्पज्ञात लोक-देवी-देवता का परिचय भी है। पुस्तक राजस्थान के लोक जीवन का दर्पण है। भेजी, रामदेवजी, पीपाजी, गोरज्यामाता, राणीसती, करणी माता, गोरधनजी, चंडीमाता आदि देवी-देवताओं का परिचय, लोक मान्यता तथा पूजा आदि का विस्तृत विवरण पुस्तक की विशेषता है। ऐसे सुन्दर ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए राजस्थान देवस्थान विभाग का अभिनन्दन।

शब्दार्थ को समर्पित जीवन

सम्पादक : **व्योमेश शुक्ल**

प्रकाशक : वाणीप्रिया प्रकाशन
2/54, सूचीनगर, कोलकाता-700 040

मुनमुन सरकार ने बँगला और हिन्दी के मध्य सेतु स्थापित किया। उन्होंने अनेक बंगला ग्रन्थों को हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ कराया। 14 अगस्त 1961 को जन्मी मुनमुन का 15 जनवरी 2002 को निधन हो गया। मुनमुन सरकार ने तसलीमा नसरीन की पुस्तकों के अनुवाद किये ही, उन्होंने विभूति भूषण वंद्योपाध्याय, आशापूर्णा देवी, समरेश बसु, महाश्वेता देवी, सत्यजित राय जैसे अनेक बंगला साहित्यकारों की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया। मुनमुन सरकार के प्रशंसकों द्वारा उनकी स्मृति में प्रस्तुत यह स्मृति ग्रन्थ है।

गुजराती के दो उपन्यास

गुजराती ग्रन्थों के प्रमुख प्रकाशक साहित्य संकुल, चौरा बाजार, सूरत प्रतिवर्ष गुजराती में प्रकाशित छः साहित्य कृतियाँ अन्य भाषा में प्रकाशित करते हैं उसके अन्तर्गत हिन्दी में प्रकाशित दो ग्रन्थ—

समकाल

चंद्रकांत बक्षी

मूल्य : 180.00

समकाल गुजराती के प्रमुख कथाकार चंद्रकांत बक्षी का उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्तर जेठमलजी ने किया है। गुजराती विदेशों विशेषकर अमेरिका से जुड़े होते हैं, जिसके कारण परिवार अत्यन्त आधुनिक होते हैं, उनके कार्य व्यापार, परिवेश सभी में पूरी उन्मुक्तता होती है। 'समकाल' में ऐसे ही प्रवासी गुजराती परिवार के उन्मुक्त जीवन की संघर्षमय कहानी है। उपन्यास अत्यन्त रोचक है।

समयदीप

भगवतीकुमार शर्मा

अनुवाद : सविता गौड़

संक्रान्तिकाल से गुजर रहे सामाजिक जीवन की वास्तविकता से परिपूर्ण यह लघु उपन्यास आधुनिकता और परम्परागत संस्कारों की कहानी है। हिन्दी के उपन्यासों से भिन्न इसका कथानक महानगरीय जीवन के संघर्ष को सजीव करता है।

माहेश्वरी समाज की महान् विभूतियाँ

लेखिका : **डॉ० आशारानी लखोटिया**

प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन समिति
गणेश भवन, भाजी मण्डी
नागपुर-440 002

माहेश्वरी समाज सेवा, उद्योग, साहित्य तथा राजनीति सभी में अग्रणी रहा है। इस पुस्तक में समाजसेवी श्री कृष्णदास जाजू, साहित्य साधक विदर्भ-केसरी ब्रजलाल बियाणी, उद्योगपतियों के सिरमौर घनश्यामदास बिड़ला, स्वतंत्रता सेनानी तथा हिन्दीसेवी साहित्यकार सेठ गोविन्ददास, दैनिक 'नवभारत' (नागपुर) के यशस्वी सम्पादक माहेश्वरी सभा को समर्पित रामगोपाल माहेश्वरी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय प्रस्तुत है जो अत्यन्त प्रेरक है। देश निर्माण में उनकी भूमिका प्रशंसनीय है।

अन्तर्ध्वनि

डॉ० कमला जैन

नेहा प्रकाशन, दिल्ली

मूल्य : 100.00

डॉ० कमला जैन की 'अन्तर्ध्वनि' हिन्दी और अंग्रेजी में लिखे विचार बिन्दुओं में साहित्य, दर्शन एवं अध्यात्म की त्रिवेणी है। यह संग्रह अन्तर की अभिव्यक्ति है जो आज के आधुनिक जीवन के अधूरेपन से जुड़े अकेलेपन, बनते-बिगड़ते रिश्ते, प्रेम, स्वार्थ वृत्तियाँ आदि को अभिव्यक्त करती हैं। आत्मकथात्मकता पाठक की दुखती रग पर हाथ रख देती है,

''मनुष्य जितना कमजोर होता है उतना ही उसे दूसरों से 'प्यार' या कृपा मिलती है और जितना वह सक्षम होता जाता है या उसकी योग्यता बढ़ती जाती है उतनी ही दूसरों से ईर्ष्या व घृणा मिलती है कैसी विडम्बना है।'' **—आशा विश्वास**

नयी सोच की कहानियाँ

दयानन्द वर्मा

माइंड एंड बॉडी रिसर्च सेन्टर
W-21 ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1
नई दिल्ली-110 048

मूल्य : 150.00

दयानन्द वर्मा विचारक, हस्त रेखा विशारद और सहृदय साहित्यकार हैं। नयी सोच की कहानियाँ समाज के स्वाभिमान और विसंगतियों को उजागर करती हैं। सत्य घटनाओं पर आधारित ये लघु कहानियाँ मानव स्वभाव के विभिन्न क्षणों की कहानी कहती हैं। ये वास्तव में नयी सोच की कहानियाँ हैं जो मनोरंजन नहीं सोचने को प्रेरित करती हैं।

ब्रह्मज्ञान का यथार्थ

दयानन्द वर्मा

माइंड एंड बॉडी रिसर्च सेन्टर
W-21 ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1
नई दिल्ली-110 048

मूल्य : 95.00

लेखक का मानना है कि ब्रह्मज्ञान का विषय केवल आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है। इसमें आध्यात्मिक ज्ञान के साथ भौतिक ज्ञान भी समाविष्ट है। इसे लेखक ने विभिन्न शीर्षकों—'कर्म काण्ड : नये पुराने', 'लक्ष्मी और सरस्वती में वैर कैसा?', 'मन की थाह पाने के कुछ सूत्र', 'फलित ज्योतिष : कितना वैज्ञानिक?', 'कट्टरता का पक्ष विपक्ष', 'मानव देह में पंच भूतों की स्थिति कैसे?', 'अहंकार कितना बुरा कितना अच्छा', 'पुराण चर्चा' के अन्तर्गत रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इससे पाठक को नीय जानकारी मिलती है।

पुस्तक-परिचय

मृत्यु की दस्तक
प्राचीन शास्त्र और आधुनिक ज्ञान

सम्पादक

बैद्यनाथ सरस्वती एवं रामलखन मौर्य

संस्करण : 2005

डी०के० प्रिण्ट वर्ल्ड, नई दिल्ली

मूल्य : 300.00

सन् 2002 में दिनांक 1 से 3 नवम्बर तक निर्मलकुमार बोस प्रतिष्ठान, वाराणसी की ओर से 'मृत्यु की अवधारणा—प्राचीन शास्त्र और आधुनिक ज्ञान' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गयी थी। इस गोष्ठी में 40 से अधिक विद्वानों में अपने शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किये। समीक्ष्य पुस्तक में इस गोष्ठी में 27 शोध-प्रपत्र संकलित हैं।

मृत्यु सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक सत्य है। जीवन का भी रूप कुछ ऐसा ही है। मृत्यु एवं जीवन दोनों एक दूसरे का निषेध तो करते हैं पर सार्वकालिकता एवं सार्वभौमिकता की दृष्टि से दोनों एक ही श्रेणी में आते हैं। जीवन एवं मृत्यु-विषयक अनन्त प्रश्न मानवीय सभ्यता के उषाकल से ही पूछे जाते रहे हैं। विभिन्न देशों और कालों में इनके उत्तर भी दिये जाते रहे हैं। प्रश्नोत्तर का यह क्रम आज भी चल रहा है, पर यह प्रश्न अब भी अनुत्तरित है। मृत्यु-विषयक प्रश्न एक बार फिर बोस प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित गोष्ठी में उठाये गये। इन प्रश्नों के उत्तर विभिन्न संस्कृतयों के वाहकों और नव-चिन्तकों ने क्या दिये, यह इस पुस्तक में संकलित प्रपत्रों के अध्ययन से ज्ञात होते हैं। मृत्यु-विषय पर यह एक अद्भुत ग्रन्थ है। प्रत्येक बुद्धिधर्मी के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है।

मुसाफिर का सफर से लौटकर अपने वतन जाना
इसी को मौत कहते हैं, यही होता है मर जाना।

—वंशीधर त्रिपाठी

विद्या कामधेनु है।

—चाणक्य

विद्या नाम नरस्य रुपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः॥
विद्या बन्धुजनो विदेश-गमने विद्या परा-देवता।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

—भर्तृहरिः

फार्म-4 नियम 8 के अन्तर्गत अपेक्षित 'भारतीय वाङ्मय' नामक पत्रिका से सम्बन्धित
स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण

प्रकाशन का स्थान	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
प्रकाशन की आवर्तता	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	अनुरागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
प्रकाशक का नाम	:	अनुरागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
सम्पादक का नाम	:	परागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001

उन व्यक्तियों के नाम और पते जो पत्रिका के स्वामी और कुल प्रदत्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या भागीदार हैं—

विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001

मैं अनुरागकुमार मोदी, एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही हैं।

ह/-

अनुरागकुमार मोदी, प्रकाशक

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **अप्रैल 2005** **अंक : 4**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

RNI No. UPHIN/2000/10104

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎:Offi.(0542)2421472,2413741,2413082,(Resi.)2436349,2436498,2311423 ●Fax(0542)2413082